

ई.एम.आई. चार्वाक दर्शन और मानव जीवन (सुभाषनगर, सागर के संदर्भ में)

प्रिया ठाकुर* डॉ. सुनील साहू**

* छात्र, बीए तृतीय वर्ष, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ई.एम.आई. का उपयोग आजकल एक आम सी बात हो गई है फिर चाहे वह एक मोबाइल फोन के लिए किए गए ई.एम.आई. के उपयोग से नाता रखता हो या चाहे बड़े-बड़े वाहनों और मशीनों के लिए ई.एम.आई. के उपयोग की बात हो एक व्यक्ति किसी ऋण और साथ ही किसी वस्तु के लिए ई.एम.आई. का उपयोग करता है ई.एम.आई. के उपयोग में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भी प्रबल भागीदारी देखने में सामने आई है। ई.एम.आई. के द्वारा व्यक्ति अपनी कम आय में भी अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। चार्वाक दर्शन तीन नास्तिक दर्शनों में से प्रमुख नास्तिक दर्शन है। जो वर्तमान जीवन में सुख को महत्व देता है। इसका मानना है कि भविष्य की अनिश्चितताओं के बजाय वर्तमान में सुख का अनुभव करना चाहिए। इस शोध पत्र में ई.एम.आई. सुविधा का उपयोग कर रहे व्यक्तियों के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। मासिक आय के आधार पर 10000 - 20000 तक वेतन पाने वाले लोगों में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ई.एम.आई. के उपयोग की प्रवृत्ति अधिक देखी गई लगभग 73.3 प्रतिशत लोगों द्वारा वाहन के लिए ई.एम.आई. का उपयोग किया जा रहा है जबकि 16.7 प्रतिशत लोगों द्वारा किसी ऋण के लिए ई.एम.आई. की किस्त भरी जाती है। शोध पत्र में ई.एम.आई. सुविधा का उपयोग करने वाले व्यक्तियों की समस्याएं व सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

शब्द कुंजी – ई.एम.आई., चार्वाक दर्शन, मानव जीवन, ऋण।

प्रस्तावना – ई.एम.आई. क्या है ?

ई.एम.आई. का शाब्दिक अर्थ है सामान मासिक किस्त जिसे अंग्रेजी में Equated Monthly Installment भी कहा जा सकता है जब हम किसी कंपनी या बैंक से बड़ी राशि का ऋण लेते हैं तो उसके लाभ के साथ मूल राशि पर ब्याज भी जुड़ जाता है इस बढ़ती राशि को हम मासिक रूप से किश्त भरकर समाप्त कर सकते हैं इस मासिक किश्त का भुगतान ही ई.एम.आई. कहलाता है।

ई.एम.आई. वर्तमान मानव के लिए एक सुविधा का विषय है। ई.एम.आई. आजकल प्रत्येक वस्तु के लिए एवं अपनी आवश्यकताओं तथा अपनी शौक को पूरा करने का सबसे सरल रास्ता है। जिन व्यक्तियों का यह अनुमान होता है कि भविष्य में उनकी आय के स्रोत स्थिर बने रहेंगे या बढ़ाने की संभावना है वह अपनी वर्तमान आय कम होने के बावजूद अपनी अव्यवस्थाओं एवं जरूरतों को पूरा करने के लिए वस्तुओं का क्रय इस आधार पर कर लेता है कि वह उन वस्तुओं का भुगतान ई.एम.आई. पर कर सकता है।

ई.एम.आई. के द्वारा व्यक्ति अपनी कम आय में भी अपनी सभी जरूरतों को पूरा कर सकता है इस शोध पत्र में किसी व्यक्ति के जीवन के किसी विभिन्न पहलुओं अथवा सामाजिक जीवन और आर्थिक जीवन पर ई.एम.आई. के उपयोग से क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन किया है। आजकल चार्वाक दर्शन के अनुसार यदि सुख प्राप्त करने के लिए उधार लेना पड़े, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। यह दर्शन इस विचार को प्रकट करता है कि

जब तक जीवन है, सुख से जीना चाहिए और यदि इसके लिए उधार लेना पड़े तो लेना चाहिए। इस दर्शन के अनुसार मृत्यु के बाद कोई अस्तित्व नहीं है, इसलिए उधार चुकाने की चिंता नहीं करना चाहिए। इसमें कहा गया है कि 'ऋणकृत्वा घृतम पिबेत्' अर्थात् 'ऋण लेकर भी घी पियों।'

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र में जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ प्रमुख शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है जिसमें सर्वप्रथम प्रति चयन रीति का प्रयोग किया गया है। इस विधि के द्वारा कार्य क्षेत्र में से 30 इकाइयों का चयन किया गया है एवं उनका सर्वे किया गया सर्वे करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची तैयार की गई जिसमें करीब 30 प्रश्नों के माध्यम से डेटा संग्रहण रीति के अंतर्गत जानकारी एकत्र की गई।

एकत्रित किए गए आंकड़ों को उनके समान गुणों के आधार पर वर्गीकृत करके तत्पश्चात उनको सारणी के माध्यम से व्यवस्थित किया गया। यंत्र एवं तकनीक के तौर पर प्राविधिक साक्षात्कार एवं अंतिम साक्षात्कार अनुसूची, सामान्य गणितीय रीति प्रतिशत रीति एवं ग्राफ चित्रों का प्रयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा

1. **कोयंबटूर शहर में वाणिज्यिक बैंकों के समान मासिक किस्त ई.एम.आई विकल्पों के प्रति उधारकर्ता की संतुष्टि** – बैंकिंग उद्योग सहित प्रत्येक उद्योग में ग्राहक संतुष्टि आवश्यक है। बैंकिंग संस्थान ई.एम.आई. सुविधा अपनी प्रभावी सेवाओं के माध्यम से ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं। अन्वेषक ने ग्राहक संतुष्टि का विश्लेषण

करने और कोयंबटूर में वाणिज्यिक बैंकों में ई.एम.आई. ऋण सेवा के प्रभावों की जाँच करने का एक प्रयास किया है। उत्तरदाताओं की मासिक आय अधिक है और उन्होंने कोयंबटूर शहर में विलासिता की वस्तुओं और वाहनों को खरीदने के लिए ऋण लिया है।

2. भारत में ई.एम.आई. निर्भरता का विकास : ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण – समान मासिक किश्तें (ई.एम.आई.) उपभोक्ता वित्तपोषण की प्रमुख विशेषता बन गई हैं। जिससे परिवारों को बिना किसी अग्रिम भुगतानों के सामान और सेवाएँ खरीदने की अनुमति मिलती है। 2010 के बाद की अवधि में ई.एम.आई. संचालित ऋण में विस्फोट देखा गया। जिसमें आवास ऋण सबसे आगे रहे। वित्तीय वर्ष 2023 तक गृह ऋण कुल खुदरा ऋण पोर्टफोलियो का 47.7 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि 2005 में यह केवल 25 प्रतिशत था। (सीआरआईएफ हाई मार्क-2024)।

‘अभी खरीदें बाद में भुगतान करें’ (बीएनपीएल) योजनाओं जैसे अभिनव वित्तीय उत्पादों की शुरुआत ई.एम.आई. के उपयोग को और बढ़ावा दिया है।

3. समान मासिक किश्त ई.एम.आई. योजनाएँ और अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें (बीएनपीएल) सेवाएँ कैसे आवेगपूर्ण खरीदारी को बढ़ावा देती हैं। – ई.एम.आई. योजनाएँ और बीएनपीएल सेवाएँ काफी लचीलापन और सुविधा प्रदान करती हैं। लेकिन उनके साथ कुछ संभावित जोखिम भी जुड़े हैं, जिनका ग्राहकों को सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना चाहिए। शोध के अनुसार, यदि ऋण का उचित उपयोग नहीं किया जाता है तो अस्थिर भुगतान और आसान ऋण उपलब्धता की अपील के परिणामस्वरूप आवेगपूर्ण व्यय और अधिक वित्तीय कठिनाइयाँ हो सकती हैं।

4. मुम्बई की आय का 50 प्रतिशत से ज्यादा रकम ई.एम.आई. पर खर्च।

जानकारी संग्रह – शोध पत्र के लिए तैयार किए गए प्रश्नों की प्रश्नावली के द्वारा कार्य क्षेत्र के लोगों का सर्वे कर आंकड़े एकत्रित किए गए। सर्वे के माध्यम से लोगों से निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर आंकड़े एकत्रित किए गए –

उनसे प्राप्त आंकड़े निम्न अनुसार हैं–

आयु के आधार पर वर्गीकरण – इस शोध पत्र के सर्वे के लिए 30 लोगों को चुना गया। जिसमें विभिन्न आयु वर्ग के लोगों को सम्मिलित किया गया। 30 – 40 आयु वर्ग के लोगों में ई.एम.आई. के अधिक उपयोग की प्रवृत्ति देखी गई अर्थात् 30-40 का आयु वर्ग एक ऐसी अवस्था है जहाँ लोगों द्वारा नई वस्तुओं एवं नई इच्छाओं की पूर्ति के लिए अत्यधिक मात्रा में धन का निवेश किया जाता है।

सारणी – 01: आयु के आधार पर वर्गीकरण

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
20-30	1	3.5%
30-40	15	50%
40-50	5	16.6%
50-60	7	23.3%
60-70	2	6.6%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

लिंग के आधार पर वर्गीकरण – सारणी एवं पाई चार्ट के आधार पर ई.एम.आई. के उपयोग का विवरण दर्शाया गया है। जिसमें 30 प्रतिशत महिला उत्तरदाता एवं 70 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता हैं। इस विवरण में असमानता के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारक हो सकते हैं। जिसमें पुरुषों की अधिक आय होने की संभावना है। जिससे उनकी क्रेडिट तक बेहतर पहुँच और ई.एम.आई. भुगतान करने की क्षमता बढ़ जाती है। साथ ही कुछ पारंपरिक लैंगिक कारक भी इस असमान विवरण के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

सारणी – 02: लिंग के आधार पर वर्गीकरण

लिंग वर्ग	संख्या	प्रतिशत
महिला	9	30%
पुरुष	21	70%
कुल	30	100

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

पेशे के आधार पर वर्गीकरण – पेशे के आधार पर स्वरोजगार करने वाले लोगों का प्रतिशत ई.एम.आई. के उपयोग में सर्वाधिक 36.7 प्रतिशत प्राप्त हुआ जबकि सबसे कम प्रतिशत 13.4 प्रतिशत निजी संस्थानों में कार्य करने वाले लोगों का प्राप्त हुआ है। स्वरोजगार करने वाले व्यक्तियों में ई.एम.आई. के उच्च प्रतिशत विभिन्न कारणों से हो सकते हैं जैसे व्यवसायिक सम्पत्तियों (जैसे – उपकरण) में निवेश, ऋणों के माध्यम से व्यक्तिगत खर्च आदि। निजी क्षेत्र में ई.एम.आई. की हिस्सेदारी कम होने का कारण व्यक्तिगत खर्चों पर ऋणों की कम निर्भरता हो सकता है।

सारणी – 03: पेशे के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
स्वरोजगार	11	36.7%
व्यापारी	07	23.3%
निजी संस्था में कार्यरत	04	13.4%
सरकारी कर्मचारी	08	26.6%
बेरोजगार	–	–
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण – मासिक आय के आधार पर वर्गीकृत किये जाने पर रुपये 10000 – रुपये 20000 कमाने वाले लोगों का प्रतिशत सर्वाधिक 33.4% है। इससे स्पष्ट होता है कि कम आय प्राप्त करने वाले लोग अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ई.एम.आई. के उपयोग पर जोर देते हैं।

मध्यम आय वर्ग वाले लोगों में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नकद लेन-देन से करने का सामर्थ्य नहीं होता इसलिए वे ई.एम.आई. के माध्यम से अपनी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं।

सारणी – 04: मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
<10,000	–	–
10,000 – 20,000	10	33.4%
20,000 – 30,000	8	26.6%
30,000– 40,000	7	23.3%
40,000 – अधिक	5	16.7%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. के उपयोग के आधार पर वर्गीकरण – ई.एम.आई. के राय के आधार पर 50 प्रतिशत लोगों का यह कहना था कि प्रारंभ में तो कोई कठिनाई नहीं होती परंतु बाद में भुगतान करने में असुविधा होती है। इसका कारण यह हो सकता है कि प्रारंभ में व्यक्ति यह सोचकर ई.एम.आई. के लिए राजी हो जाता है कि इसका भुगतान बाद में भी किस्तों के रूप में भी कर सकता है किंतु प्रत्येक किस्त के समय उसे किसी न किसी करणों से ई.एम.आई. भरने में आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ जाता है।

सारणी – 05: ऋण ई.एम.आई. की दस्तावेजी प्रक्रिया के अनुभव के आधार पर

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
सुविधाजनक	15	50%
बाद में कठिनाई	15	50%
नुकसान दायक	-	-
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. सुविधा लेने के कारण के आधार पर वर्गीकरण – इस आधार पर किए गए वर्गीकरण से पता चला कि 73.3% लोगों ने ई.एम.आई. सुविधा लेने का कारण वाहनों के क्रय करने की है जबकि केवल 16.7% लोगों ने ही ऋण के लिए ई.एम.आई. का भुगतान करते पाए गए हैं। वाहनों के लिए ई.एम.आई. भुगतान का उच्च प्रतिशत इस बात का संकेत हो सकता है कि जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वाहन खरीदने के लिए ई.एम.आई. जैसे वित्तपोषित साधनों का सहारा लेता है यह वाहनों की ऊँची कीमत एवं उपयोगी होने के कारण हो सकता है। वहीं दूसरी ओर ई.एम.आई. के लिए दूसरा सबसे आम कारण ऋण होता है जो व्यक्तिगत ऋण, गृह ऋण या शिक्षा ऋण हो सकता है।

सारणी – 6: ई.एम.आई. भरने के कारण के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
ऋण	05	16.7
वाहन	22	73.3
वस्तु	03	10
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ऋण की राशि के आधार पर वर्गीकरण – ई.एम.आई. भरने का कारण पूछे जाने पर 30 में से पांच लोग अर्थात् 16.7% लोगों का कारण ऋण पाया गया। इसी आधार पर एक और प्रश्न पूछा गया जो था कि आपका ऋण की राशि क्या है इसी आधार पर किए गए ऋण की राशि के वर्गीकरण में पाया गया कि 60% लोगों अर्थात् तीन लोगों ने 5 लाख से 50 लाख तक का लोन लिया है।

ऋण राशियों का वितरण इस बात का संकेत देता है कि जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आवास, शिक्षा और व्यवसायिक उद्यमों जैसे प्रमुख कारकों के लिए ऋण लेता है।

सारणी – 7: ई.एम.आई. भरने के कारण के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
50,000 – 1,00,000	-	-
1,00,000 – 5,00,000	1	20%

5,00,000 – 50,00,000	3	60%
50,00,000 – 1,00,00,00,0	1	20%
कुल	5	100

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

बचत के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण – लोगों से पूछा जाने पर कि वे बचत करते हैं या नहीं सभी का जवाब हां मिला फिर बचत का प्रकार पूछे जाने पर 40% लोगों का कहना था कि वे गहने खरीद कर बचत करते हैं जबकि 13.4% लोगों का कहना था कि वह अपने पैसे को बैंक में रखकर बचत करते हैं।

गहनों में बचत करने की उच्च प्राथमिकता यहाँ की सोच को परिलक्षित करती है। निवेश और सुरक्षा के रूप में सोने और अन्य कीमती धातुओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। बैंक खाते, डाकघर खाते और संपत्ति निवेश भी पैसे बचाने के प्रमुख साधन हैं।

सारणी – 8: बचत के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
गहने खरीदकर	12	40%
बैंक खाते में पैसे रखकर	4	13.4%
पोस्ट ऑफिस के खाते द्वारा	7	23.3%
प्रॉपर्टी खरीदकर	7	23.3%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. के उपयोग से बचत प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर वर्गीकरण – लोगों पर ई.एम.आई. के उपयोग से उनकी बचत प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर 83.4% लोगों का कहना है कि उनकी बचत की प्रवृत्ति में कमी आयी है जबकि 6.6% लोगों का कहना है कि ई.एम.आई. के प्रयोग से उनके बचत में सहायता हुई।

अधिकांश उत्तरदाताओं (83.4 प्रतिशत) का मानना है कि ई.एम.आई. का भुगतान करने से उनकी बचत प्रवृत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह ई.एम.आई. से जुड़े मासिक व्यय के कारण हो सकता है। एक छोटे हिस्से का मानना है कि ई.एम.आई. ने उन्हें बचत करने में मदद की है। संभवतः यह अनुशासित खर्च और नियोजित वित्तीय खर्च के कारण हो सकता है।

सारणी – 9: ई.एम.आई. के उपयोग से बचत प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
बचत में सहायता	2	6.8%
बचत में कमी	25	83.4%
बचत का मौका नहीं	3	10%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. की किस्त भरने में देरी के आधार पर वर्गीकरण – ई.एम.आई. की किस्त भरने में देरी का प्रश्न पूछे जाने पर 60% लोगों का जवाब नहीं था जबकि 40% लोगों की किस्त भरने में देरी हुई है। उत्तरदाताओं के एक महत्वपूर्ण हिस्से ने (40 प्रतिशत) ई.एम.आई. भुगतान में देरी की सूचना दी जो उन पर होने वाले आर्थिक दबाव की ओर संकेत करती है। इससे देर से भुगतान शुल्क, क्रेडिट स्कोर को नुकसान और शायद ऋण चूक तक की समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

सारणी - 10: ई.एम.आई. की किस्त भरने में देरी के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
हां	12	40%
नहीं	18	60%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. के उपयोग से लाभ के आधार पर वर्गीकरण - ई.एम.आई. के उपयोग से लाभ के आधार पर वर्गीकरण में पाया गया की 70% लोगों को ई.एम.आई. के उपयोग से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि का लाभ हुआ जबकि 23.3% लोगों का कहना है की ई.एम.आई. के उपयोग से उनके व्यापार में वृद्धि हुई। अधिकांश उत्तरदाताओं (70 प्रतिशत) का मानना है कि ई.एम.आई. के उपयोग से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। यह उपभोक्ता वस्तुओं के स्वामित्व और किश्तों के भुगतान कर पाने की क्षमता के कारण हुआ है।

सारणी - 11: ई.एम.आई. के उपयोग से लाभ के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
स्वयं का घर	2	6.7%
सामाजिक प्रतिष्ठा	21	70%
व्यापार में वृद्धि	7	23.3%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. व्यवस्था से संतुष्टि के आधार पर वर्गीकरण - जब लोगों से यह पूछा गया कि वह ई.एम.आई. व्यवस्था से वे कितने संतुष्ट हैं तो 66.6% लोगों का जवाब अधिक प्रसन्न था जबकि 20% लोगों ने कहा कि वह ई.एम.आई. व्यवस्था से बहुत अधिक प्रसन्न है। अधिकांश उत्तरदाता या तो संतुष्ट है या बहुत संतुष्ट है जो ई.एम.आई. की सकारात्मक धारणा को प्रस्तुत करता है हालांकि एक छोटा हिस्सा (13.1 प्रतिशत) कुद असंतुष्टि व्यक्त कर रहे हैं जो ब्याज की उच्च दरों ई.एम.आई. का प्रबंधन न कर पाने जैसी समस्याओं के कारण हो सकता है।

सारणी - 12: ई.एम.आई. व्यवस्था से संतुष्टि के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
बहुत अधिक	6	20%
अधिक	20	66.6%
थोड़ा कम	4	13.4%
कुल	30	100%

स्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

इस शोध पत्र से यह परिणाम निकाला जा सकता है कि ई.एम.आई. का उपयोग आजकल एक आम सी बात हो गई है फिर चाहे वह एक मोबाइल फोन के लिए किए गए ई.एम.आई. के उपयोग से नाता रखता हो या चाहे बड़े-बड़े वाहनों और मशीनों के लिए ई.एम.आई. के उपयोग की बात हो एक व्यक्ति किसी ऋण और साथ ही किसी वस्तु के लिए ई.एम.आई. का उपयोग करता है।

निष्कर्ष :

1. ई.एम.आई. के उपयोग में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भी प्रबल भागीदारी देखने में सामने आयी है।
2. लोग एक ही समय पर एक से अधिक वस्तुओं को के लिए ई.एम.आई. का भुगतान करते हैं।
पैसे के आधार पर स्वरोजगार करने वाले लोगों द्वारा ई.एम.आई. का उपयोग सर्वाधिक 36.7% किया जा रहा है। सरकारी कर्मचारी, व्यापारियों एवं निजी संस्थानों में कार्यरत व्यक्तियों द्वारा क्रमशः 26.6%, 23.3%, 13.4% की संख्या में ई.एम.आई. का उपयोग किया जा रहा है।
3. मासिक आय के आधार पर 10000 - 20000 तक वेतन पाने वाले लोगों में ई.एम.आई. के उपयोग की प्रवृत्ति अधिक देखी गई।
4. लगभग 80% विवाहित लोगों द्वारा ई.एम.आई. का सर्वाधिक उपयोग किया जा रहा है शैक्षणिक योग्यता की दृष्टि से स्नातक उत्तीर्ण लोगों द्वारा ई.एम.आई. के उपयोग में संकीर्णता देखी गई जो की UG और PG के बारे में क्रमशः 33.4% और 40% है। लगभग 73.3% लोगों द्वारा वाहन के लिए ई.एम.आई. का भुगतान किया जा रहा है जबकि 16.7% लोगों द्वारा किसी ऋण के लिए ई.एम.आई. की किस्त भरी जाती है।

अनुशंसाएँ :

1. लोगों को किसी भी प्रकार के लोन एवं वस्तु को खरीदते समय अधिक डाउन पेमेंट करनी चाहिए ताकि ई.एम.आई. में कमी हो सके और बाद में इसकी अदायगी में लोगों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो।
2. यदि आप आर्थिक तनाव का सामना कर रहे हैं तो आपको लोन की अवधि को बढ़ाकर ई.एम.आई. को कम करने का प्रयास करना चाहिए।
3. लोगों को एक ही समय पर एक से अधिक वस्तुओं वाहनों या लोन के लिए ई.एम.आई. का उपयोग नहीं करना चाहिए इससे उन पर आर्थिक तनाव बढ़ेगा।
4. फिक्स्ड दर की स्थान पर ई.एम.आई. के लिए फ्लोटिंग ब्याज दर को चुनना चाहिए।
5. ई.एम.आई. की दरें कम होनी चाहिए इसके लिए सरकार एवं बैंकों को योजनाएं बननी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. <https://sist.sathyabama.ac.in/sistnaac/document/1.7.4/1922-6.com-B©.con-batchro-26pdf>
2. <https://ifcat.org/papers/1JCRT2304348.pdf>
3. <https://economictimes.indiatimes.com/topic/have-loan-eni>
4. <https://timerofindia.com/owadensklag!transfarmingoraragementmarket-one-/apple-winning-the-time-47642/>
5. <https://www.ijsdrang/papers/TTSDR1303030pdf>
6. <http://www.deshbandhu.co.in/ectitania/litetcomplex-challenges-of-fareigos-trade-768-05-2>
7. <https://search.app/RShRvRAGV6HAu7bp9>
8. <https://search.app/ydwdG5sBRCRXn82c8>
9. <https://search.app/DtquDQrSTTZwfXz97>
10. <https://egyankosh.ac.in>